bdkbl 21 dkeqnh egkRlo % fo'y"k.k vkj eY;kdu

bdkbl dh :ij[kk

21.0 उद्देश्य
21.1 प्रस्तावना
21.2 कथानक
  21.2.1 आरंभ
  21.2.2 विकास
  21.2.3 संघर्ष की परिणति यानी कथानक का अंत
  21.2.4 संकलन-त्रय का निर्वाह
21.3 चरित्र-चित्रण
  21.3.1 चंद्रगुप्त
  21.3.2 चाणक्य
  21.3.3 वसुगुप्त
21.4 परिवेश
21.5 संरचना-शिल्प
  21.5.1 भाषा
  21.5.2 शैली
  21.5.3 संवाद
21.6 अभिनेयता या रंगमंचीयता
21.7 मूल्यांकन
21.8 सारांश
21.9 शब्दावली
21.10 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

21-0 mÌs';

पिछली इकाई में आपने 'कौमुदी महोत्सव' एकांकी का वाचन किया। आशा है कि आप इस एकांकी को भली-भाँति समझ गए होंगे। इस इकाई में हम एकांकी के तत्वों की दृष्टि से कौमुदी महोत्सव का मूल्यांकन और विश्लेषण करेंगे। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- 'कौमुदी महोत्सव' की कथावस्तु का विश्लेषण कर सकेंगे;
- इसके पात्रों का चरित्र-चित्रण कर सकेंगे;
- इसके परिवेश की विशेषताएँ बता सकेंगे;
- इसके संरचना-शिल्प को समझ सकेंगे;
- अभिनेयता की दृष्टि से 'कौमुदी महोत्सव' का मूल्यांकन कर सकेंगे;
- एकांकीकार की दृष्टि और एकांकी के प्रतिपाद्य का विवेचन कर सकेंगे;
- एकांकी के शीर्षक की सार्थकता के बारे में अपना मत दे सकेंगे; और
- उपर्युक्त तत्वों की दृष्टि से अन्य एकांकियों के विश्लेषण का प्रयास कर सकेंगे।

21-1 iLrkouk

आपने पिछली इकाई में डॉ. रामकुमार वर्मा के एकांकी 'कौमुदी महोत्सव' का ध्यानपूर्वक वाचन किया। आप अच्छी तरह जान गए हैं कि लेखक इस एकांकी के माध्यम से क्या कहना चाहता है। आपको यह पता लग गया है कि यह नाटक प्राचीन भारतीय इतिहास के मौर्यकाल से संबंधित है। चंद्रगुप्त और चाणक्य दो पात्र ऐतिहासिक हैं शेष वसुगुप्त, अलका, यशोवर्मन, पुष्पदंत आदि काल्पनिक पात्र हैं। इस इकाई में आप एकांकी नाटक के तत्त्वों के आधार पर 'कौमुदी महोत्सव' का विश्लेषण और मूल्यांकन का अध्ययन करेंगे।

21-2 dFkkud

इकाई 18 में एकांकी के विभिन्न तत्वों की चर्चा करते समय हमने कथावस्तु के बारे में भी विचार किया था। एकांकी में प्रस्तुत घटना ही उसकी कथावस्तु अथवा कथानक है। 'कौमुदी महोत्सव'

का कथानक ऐतिहासिक है। यह प्राचीन भारतीय इतिहास के मौर्यकाल से संबंधित है। यह इतिहास प्रसिद्ध घटना है कि चंद्रगुप्त मौर्य ने चाणक्य की सहायता से नंद वंश के अंतिम शासक, अन्यायी और अत्याचारी नंद को समाप्त किया और मौर्य वंश की स्थापना की। प्रस्तुत कथावस्तु चंद्रगुप्त के राज्यारोहण से ही संबंधित है।

इतिहास से कथानक चुनने के बावजूद साहित्यकार को अपनी कल्पना के प्रयोग की छूट होती है। वह इतिहास में कल्पना का रंग दे सकता है। क्योंकि वह इतिहास नहीं लिख रहा साहित्यिक कृति की रचना कर रहा है। किंतु इसका अर्थ यह नहीं कि वह ऐतिहासिक तथ्यों को तोड़-मरोड़ सकता है या उन्हें बिल्कुल विपरीत रूप में प्रस्तुत कर सकता है। ऐसा करने से तो कृति की विश्वसनीयता समाप्त हो सकती है। अतः ऐतिहासिकता की रक्षा करते हुए कल्पना का समावेश ही उचित होता है।

प्रस्तुत एंकाकी में कौमुदी महोत्सव के आयोजन की व्यवस्था, विषकन्या का प्रसंग आदि काल्पनिक प्रसंग हैं। प्राचीन समय में राजा लोग अपने शत्रु का अंत करने के लिए विषकन्या का प्रयोग करते थे। यहाँ भी एकांकीकार ने कल्पना की है कि नंद के प्रति सहानुभूति रखने वाले व्यक्ति –जिनमें राक्षस प्रमुख है नंद का मंत्री – सम्राट चंद्रगुप्त के प्रति विद्रोह कर सकता है और विषकन्या का प्रयोग करके चंद्रगुप्त को समाप्त कर सकता है।

एकांकी के तत्वों की चर्चा करते समय हमने विचार किया था कि एंकाकी में कथानक की घटनाएँ सीधी नहीं बढ़ती, उनमें उतार-चढ़ाव आता है। इस उतार-चढ़ाव की दिशा अंत में एक चरम बिंदु की ओर होती है। इस दृष्टि से कार्य व्यापार की तीन अवस्थाएँ होती हैं–आरंभ, विकास और अंत या संघर्ष की परिणति। आगे हम इस विकासक्रम के विश्लेषण का प्रयोग करेंगे।

21-2-1 vkjEHk

नाटक में कार्य व्यापार पात्रों के बीच वार्तालाप और उनके कार्यकलाप के माध्यम से आगे बढ़ता है। अतः लेखक सबसे पहले पात्रों से हमारा परिचय कराता है फिर स्थान, समय, स्थिति आदि के बारे में रंग-निर्देश देता है। इस दृष्टि से 'कौमुदी महोत्सव' को देखने पर हम पाते हैं कि चंद्रगुप्त, चाणक्य, यशोवर्मन आदि पात्रों का परिचय कराने के बाद सम्राट चंद्रगुप्त के कुसुमपुर में प्रवेश के समय जनता के उल्लास की चर्चा लेखक ने की है। इस एकांकी का आरंभ समाहर्त्ता वसुगुप्त और अंतपाल यशोवर्मन के वार्तालाप से होता है। दोनों की बातचीत से स्पष्ट होता है कि कुसुमपुर के लोगों में सम्राट चंद्रगुप्त के प्रति काफी उत्साह है किंतु फिर भी चंद्रगुप्त के विरोधियों का पूर्णतया अंत नहीं हुआ है। कहीं से भी विद्रोह हो सकता है। यशोवर्मन के मन में संदेह है कि विद्रोह की ज्वाला कहीं सुलग रही है और अवसर पाते ही प्रज्वलित हो सकती है किंतु वसुगुप्त का कहना है कि यह यशोवर्मन का संदेह है और जनता में यदि कोई विरोध है भी तो वह शीघ्र ही नष्ट हो जाएगा। तभी चंद्रगुप्त कार्यांतिक पुष्पदंत के साथ प्रवेश करता है। जनता के उत्साहपूर्ण व्यवहार में चंद्रगुप्त को वीरता और शौर्य का अभाव दिखाई देता है, उसे उसमें एक तरह की कायरतापूर्ण विडम्बना का अहसास होता है। नंद द्वारा स्थापित अव्यवस्था और भोगविलास की नीतियों को समाप्त करके चंद्रगुप्त सुव्यवस्था और सुशासन की स्थापना करना चाहता है जिससे जनसामान्य के मन का क्षोभ समाप्त हो। यह बात हमें चंद्रगुप्त के निम्नलिखित कथन से स्पष्ट होती हैः

> ***pnzxqIr** % आचार्य चाणक्य की सहायता से जो कुछ अभी तक हुआ है, उसके प्रति नागरिकों में असंतोष तो नहीं होना चाहिए। तक्षशिला के अनुभव से मैं कुसुमपुर की सभी बाधाएँ दूर करना चाहता हूँ। शासन का मापदण्ड प्रजा का संतोष और सुख होना चाहिए।''*

जनता में सद्भाव की स्थापना के लिए चंद्रगुप्त कौमुदी महोत्सव के आयोजन की घोषणा के आदेश देता है। यहीं हमें पता चलता है कि कौमुदी महोत्सव के आयोजन का प्रस्ताव वसुगुप्त ने दिया था। पुष्पदंत की बातचीत से यह भी पता चलता है कि इस घोषणा से लोग काफी प्रसन्न हैं। किंतु इसी समय यशोवर्मन चंद्रगुप्त को सलाह देता है कि उत्सव को देखने में सतर्कता रखनी चाहिए क्योंकि जनता में कुछ लोग ऐसे भी हो सकते हैं जो नंदवंश के विनाश से क्षुब्ध हों। हो सकता है यह उत्सव उन लोगों में चंद्रगुप्त के प्रति राजभक्ति पैदा कर दे और वैरभाव या विरोध को भूल जाएँ। किंतु फिर भी उनके प्रति निश्चिंत नहीं रहा जा सकता। इसी समय वसुगुप्त कहता है कि सतर्कता की कोई जरूरत नहीं।

कार्यांतिक पुष्पदंत सम्राट को कौमुदी महोत्सव की भव्य सजावट के बारे में बताता है और चंद्रगुप्त घोषणा करता है कि इस उत्सव पर खर्च होने वाली सारी धनराशि सम्राट के व्यक्तिगत कोष से खर्च की जाएगी। इस समय वसुगुप्त एक और प्रस्ताव रखता है कि 'कौमुदी महोत्सव' के अवसर पर राजनर्तकी के नृत्य की भी व्यवस्था होनी चाहिए और चंद्रगुप्त इसकी अनुमति दे देता है। यहीं यशोवर्मन चंद्रगुप्त को आगाह करता है कि :

> ''; 'kkoeu % *मैं सम्राट की सेवा में एक निवेदन करना चाहता हूँ।*
>
> pnxIr % *निवेदन करो।*
>
> ; 'kkoeu % *विलासी नंद-वंश की राजनीति में यह राजनर्तकी अलका है।*
>
> pnxIr % *यह राजनर्तकी अलका?*
>
> ; 'kkoeu % *हाँ सम्राट! राजनर्तकी के जीवन का यह सबसे बड़ा अभिशाप है कि वह नंद वंश के विनाश का कारण बनी। और इस तरह वह निर्दोष नहीं कही जा सकती।''*

इस वार्तालाप पर ध्यान दें तो हमें कुछ बातों के महत्त्वपूर्ण संकेत मिलते हैं। राजनर्तकी अलका कोई साधारण स्त्री नहीं है। विलासी शासक नंद इसे अपने राजनीतिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए इस्तेमाल करता था और नंदवंश के पतन में भी इसकी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। साथ ही हमें यह भी संकेत मिलता है कि वसुगुप्त किसी विशेष प्रयोजन को लेकर सक्रिय है। इस तरह हमें यह अहसास होने लगता है कि स्थितियाँ सामान्य रूप से नहीं चल रहीं। कोई रहस्य है जिसका संकेत यशोवर्मन करना चाहता है। यह रहस्य क्या है? यह जानने के लिए हम आगे बढ़ते हैं।

21-2-2 fodkl

यशोवर्मन से बातचीत करते हुए चंद्रगुप्त एकदम चौंक कर रुकता है–''क्या कारण है कि मुझे कौमुदी महोत्सव के प्रारंभ की सूचना तूर्यनाद से नहीं सुन पड़ी।''

इसी समय वसुगुप्त राजनर्तकी अलका को प्रस्तुत करता है। चंद्रगुप्त कौमुदी महोत्सव का आरंभ अलका के नृत्य की झंकार से करने का आदेश देता है। अलका गीत गाती हैं फिर नृत्य करती है। चंद्रगुप्त उसकी कला से प्रसन्न होकर पुरस्कार के रूप में अपने गले की मोतियों की माला देना चाहता है किंतु उसी समय अचानक चाणक्य का प्रवेश होता है और चाणक्य घोषणा करता है कि पुरस्कार नहीं दिया जाएगा। इस तरह कथानक अचानक नाटकीय मोड़ लेता है और संघर्ष की शुरुआत हो जाती है। चंद्रगुप्त को चाणक्य की यह बात बिल्कुल पसंद नहीं आती। जब चंद्रगुप्त को पता चलता है कि चाणक्य ने कौमुदी महोत्सव की घोषणा होने ही नहीं दी तो उसे लगता है कि महामंत्री हो कर चाणक्य राज मर्यादा की अवहेलना कर रहा है। दोनों एक दूसरे के मित्र और हितैषी हैं किंतु चंद्रगुप्त को ऐसा महसूस होने लगता है कि चाणक्य अपने आपको राजा से भी ऊपर समझने लगा है :

> pnxIr % *सम्राट् कौन है, चंद्रगुप्त या चाणक्य?*
>
> pk.kD; % *चंद्रगुप्त*
>
> pnxIr % *फिर सम्राट् चंद्रगुप्त की आज्ञा की अवहेलना क्यों हो रही है?*
>
> pk.kD; % *इसलिए कि वह आज्ञा किसी मचले बालक के हठ की तरह है।*
>
> pnxIr % *फिर भी उसकी रक्षा करनी चाहिए।*
>
> pk.kD; % *नहीं बालक आग पकड़ना चाहता है। उसे आग पकड़ने की सुविधा नहीं दी जा सकती।*
>
> pnxIr % *यह तुम्हारा गर्व है, महामंत्री।*
>
> pk.kD; % *यह तुम्हारा अज्ञान है, सम्राट।*
>
> pnxIr % *(क्रुद्ध होकर) महामंत्री! कुसुमपुर की विजय में तुम्हारा हाथ रहा है तो क्या इतनी छोटी-सी विजय ने तुम्हारे गर्व की चिनगारी को फूँक मार कर लपट में परिवर्तित कर दिया? यह गर्व उस चिता की ज्वाला है जिसमें तुम्हारी राजनीति जल कर भस्म हो सकती है।*

इस वार्तालाप से हमें क्या पता चलता है? सबसे पहले तो हमें यह पता चलता है कि कोई ऐसी खास बात है जो चाणक्य की समझ में आ रही है किंतु चंद्रगुप्त की समझ से बिल्कुल बाहर है। चाणक्य चंद्रगुप्त की रक्षा का प्रयास कर रहा है और उन्हें इस बात की चिंता नहीं कि उनका व्यवहार चंद्रगुप्त को अच्छा लगेगा अथवा नहीं। किंतु स्थिति से अनभिज्ञ होने के कारण चंद्रगुप्त को लग रहा है कि चाणक्य को प्रमाद हो गया है और वह सम्राट की अवहेलना

कर रहा है।

यहाँ पहुँच कर पूरी स्थिति में तनाव पैदा होता है यह तनाव सम्राट और महामंत्री के व्यक्तित्व की टकराहट में व्यक्त होता है। आरंभ से ही यशोवर्मन की बातों और वसुगुप्त के व्यवहार से हमारे मन में एक तरह का संदेह पैदा हुआ था कि कोई रहस्य है कोई जटिल विरोध की स्थिति है। चाणक्य के व्यवहार से निश्चित हो गया कि कहीं कोई गड़बड चल रही है किंतु यह गड़बड़ और विरोध की स्थिति क्या है इसका पता अभी तक नहीं लगा है। चंद्रगुप्त और चाणक्य में काफी देर तक विवाद होता है। राजाज्ञा की अवहेलना के कारण चंद्रगुप्त स्वयं को अपमानित महसूस करता है बदले में चाणक्य का अपमान कर देता है। अपमान से क्रोधित चाणक्य चंद्रगुप्त को ध यान दिलाता है कि उसकी प्रतिशोध की प्रतिज्ञा कितनी भयानक होती है इसका प्रमाण नंद वंश के पतन से मिल चुका है।

किंतु इसी समय हम चाणक्य के व्यक्तित्व का दूसरा रूप देखते हैं। जिस चंद्रगुप्त को उसने स्वयं अपने प्रयास से कुसुमपुर का सम्राट बनाया उसके द्वारा अपमानित होने पर भी वह बदला नहीं लेना चाहता और अपमान से उत्पन्न क्रोध उसी तरह अपने भीतर पी जाता है जिस तरह शिव ने विषपान कर लिया था।

वह महामंत्री पद छोड़ने के बाद भी चाणक्य चंद्रगुप्त की सहायता करता है। चंद्रगुप्त के सर पर मँडरा रही विपत्ति को दूर करने के लिए चाणक्य यह रहस्य खोल देता है कि वसुगुप्त शत्रु का गुप्तचर है और राजनर्तकी विषकन्या है।

किंतु चाणक्य और चंद्रगुप्त के बीच वैचारिक विरोध और व्यक्तित्व की टकराहट इतने पर ही खत्म नहीं हो जाती। चंद्रगुप्त चाणक्य की बात मानने को तैयार नहीं है वह समझता है कि चाणक्य ईष्यालु और अविश्वासी है इसलिए वह वसुगुप्त और अलका पर लांछन लगा रहा है।

21-2-3 l?k"k dh ifj.kfr ;kuh dFkkud dk vr

चाणक्य द्वारा रहस्योद्घाटन कर दिए जाने पर संघर्ष खत्म नहीं होता। हमें लगता है कि स्थिति में और ज्यादा तनाव पैदा हो रहा है। चंद्रगुप्त चाणक्य से प्रमाण चाहता है। चाणक्य वसुगुप्त और अलका को सम्राट के सम्मुख प्रस्तुत कराता है और वसुगुप्त से पूछताछ करता है उत्तर-प्रत्युत्तर से नाटकीय स्थिति में तनाव पैदा होता है। हम चरम सीमा की ओर बढ़ते हैं। अंत में चाणक्य अलका की झूठी मदिरा वसुगुप्त को जबरदस्ती पिलवाता है। तुरंत ही वसुगुप्त की मृत्यु हो जाती है इस तरह सत्य का उद्घाटन हो जाता है कि वसुगुप्त राक्षस का गुप्तचर है और अलका विषकन्या। किंतु कथानक यहीं समाप्त नहीं हो जाता। अलका एक बार फिर चंद्रगुप्त पर वार करने का प्रयास करती है। क्षमा याचना का ढोंग करती हुई चंद्रगुप्त के पैरों में गिरना चाहती हैं। किंतु चाणक्य इसी समय सावधान करता है कि चंद्रगुप्त पीछे हटो अन्यथा यह पैर में दाँत चुभा कर विषदंशन कर देगी।

अब चंद्रगुप्त को अपनी भूल का बोध होता है और वह महसूस करता है कि चाणक्य की सहायता के बगैर उसका साम्राज्य सुरक्षित न रह सकेगा। एकांकी का अंत चंद्रगुप्त के इस वाक्य से होता है ''कौमुदी महोत्सव नहीं होगा''।

21-2-4 l dyu-=; dk fuokg

स्थान, समय और कार्य की एकता का निर्वाह 'कौमुदी महोत्सव' में किया गया है। समस्त घटनाचक्र कुसुमपुर के राजकक्ष में और एक ही समय में चलता है। 'कौमुदी महोत्सव' के आयोजन की घोषणा, तैयारी, राजनर्तकी के नृत्य के आयोजन की घोषणा, चाणक्य द्वारा स्थिति को उलट देना, षड्यंत्र का उद्घाटन आदि में कार्यव्यापार बिना किसी बिखराव के साथ आगे बढ़ता है।

ऊपर हमने कथावस्तु का जो विश्लेषण किया उससे आपको 'कौमुदी महोत्सव' एकांकी में घटनाओं के उतार-चढ़ाव की नाटकीय स्थितियों को समझने में मदद मिलेगी।

Ckk/k i'u

1. 'कौमुदी महोत्सव' एकांकी में यशोवर्मन का निम्नलिखित कथन किस बात का सूचक है? पाँच पंक्तियों में उत्तर दीजिए :
   ''किंतु आपको ज्ञात नहीं कि महाराज नंद के मंत्री राक्षस की नीति छद्मवेश धारण करके चलती है? नंद नहीं तो नंद के मंत्री तो हैं जो छिपकर कुसुमपुर से बाहर चले गये हैं।''

.....

.....

.....

.....

2. वसुगुप्त की क्या योजना है?

.....

.....

.....

3. चंद्रगुप्त को कौमुदी महोत्सव की घोषणा का तूर्यनाद क्यों नहीं सुनाई पड़ा?

.....

.....

.....

21-3 pfj=-fp=.k

इकाई 18 में हम पढ़ चुके हैं कि एकांकी में पात्रों की संख्या अधिक नहीं होती। प्रमुख पात्रों के अलावा एक दो गौण पात्र होते हैं। 'कौमुदी महोत्सव' में छह पात्र हैं चंद्रगुप्त, चाणक्य, वसुगुप्त, यशोवर्मन, पुष्पदंत, अलका और इनके अलावा सैनिक, दौवारिक आदि हैं जो केवल कुछ क्षणों के लिए ही आते हैं। चंद्रगुप्त, चाणक्य और वसुगुप्त की भूमिका प्रमुख है। यशोवर्मन और अलका क्रमशः इन तीनों के पूरक पात्रों के रूप में आते हैं। यशोवर्मन चंद्रगुप्त को खतरे के लिए निरंतर आगाह करता है राजनर्तकी अलका वसुगुप्त के षड्यंत्र का माध्यम है। इस तरह दोनों की कथा विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका है। कार्यांतिक पुष्पदंत मुख्यतया गौण पात्र हैं। आगे हम कुछ प्रमुख पात्रों के चरित्र का विश्लेषण करेंगे।

21-3-1 pnxqIr

चंद्रगुप्त इस एकांकी का प्रमुख पात्र है। एकांकी की सभी घटनाएँ चंद्रगुप्त के इर्द-गिर्द घूमती हैं अतः इसे एकांकी का नायक कहा जा सकता है। हम पहले कह आये हैं कि नाटक में (चाहे वह एकांकी हो या पूर्णकालिक) किसी पात्र का चरित्र दो तरह से उभर का आता है–उसके अपने संवादों तथा आचरण द्वारा और अन्य पात्रों के वार्तालाप द्वारा। लेखक स्वयं किसी पात्र के बारे में कोई वक्तव्य नहीं देता। यदि आवश्यक हो तो पात्र के रूपाकार या गतिविधियों के संबंध में रंग-निर्देश दे देता है। यहाँ भी चंद्रगुप्त से हमारा सर्वप्रथम परिचय यशोवर्मन और वसुगुप्त के वार्तालाप के माध्यम से होता है। यशोवर्मन की बातों से हमें पता चलता है कि चंद्रगुप्त का व्यक्तित्व एक वीर योद्धा का है जिसमें शौर्य और उत्साह का तेज है। इसके साथ ही हमें यह भी पता चलता है कि चंद्रगुप्त ने तक्षशिला में ग्रीक सैन्य संचालन पद्धति की जानकारी प्राप्त कर ली है तथा विदेशी राजनीति को भी स्वीकार किया है।

इसके बाद चंद्रगुप्त का मंच पर प्रवेश होता है। कुसुमपुर में उसे वह शौर्य और पराक्रम नहीं दिखाई देता है जो ग्रीक सैनिकों में था। यहीं हमें चंद्रगुप्त के व्यक्तित्व की कुछ विशेषताओं का पता चलता है जो उसके वचनों से प्रकट होती है :

> *''नागरिकों का उल्लास शृगालों का कोलाहल जैसा ज्ञात होता है जिसें हमें मनुष्यत्व देना है।''*
>
> *''तक्षशिला के अनुभव से मैं कुसुमपुर की सभी बाधाएँ दूर करना चाहता हूँ। शासन का मापदंड प्रजा का संतोष और सुख होना चाहिए।''*

पहली बात तो चंद्रगुप्त कुसुमपुर के नागरिकों को मनुष्यता प्रदान करना चाहता है। मनुष्यता प्रदान करने का तात्पर्य है उनमें श्रेष्ठ मानवीय गुणों का विकास करना चाहता है। चंद्रगुप्त से पहले कुसुमपुर पर नंदवंश का शासन था। विलासी नंद का शासन अराजकतापूर्ण था क्योंकि अपने भोग-विलास में मस्त रहने के कारण शासक न तो जनता के हितों के बारे में सोचता था न ही उनकी बौद्धिक, मानसिक और शारीरिक उन्नति के बारे में। विद्या, बुद्धि शौर्य, पराक्रम आदि श्रेष्ठ मानवीय गुणों के विकास के अवसर समाज में सभी नागरिकों को मिले इसकी

व्यवस्था शासन के स्तर पर होनी चाहिए। चंद्रगुप्त शासक के इस दायित्व को अनुभव कर रहा है इसीलिए वह जन सामान्य में पाशविकता के स्थान पर मनुष्यता की स्थापना करने की बात कहता है।

उसका दूसरा कथन भी उसकी उत्तरदायित्व की भावना का सूचक है। कुशल शासक की जिम्मेदारी होती है कि वह अपने राज्य की सभी बाधाएँ दूर करें। जिस शासन व्यवस्था में प्रजा सुखी है, संतुष्ट है निश्चित ही वह शासन व्यवस्था बहुत उत्तम है। इस कथन से पता चलता है कि भारवीर होने के साथ-साथ चंद्रगुप्त एक जिम्मेदार, कुशल और प्रजा हितैषी शासक है। वह मानता है कि ''प्रजा का संतोष ही मेरे सुख का अग्रदूत है।''

इसके बाद हम देखते हैं कि जनता के बीच सद्भाव स्थापित करने के लिए चंद्रगुप्त कौमुदी महोत्सव का आयोजन करना चाहता है। एक शासन का अंत होकर नए शासन की स्थापना के दौरान सत्ता परिवर्तन में जो हिंसात्मक कार्रवाइयाँ होती हैं उनसे जन सामान्य में क्षोभ, आतंक आदि का व्याप्त हो जाना स्वाभाविक ही है। नंदवंश के अंत और मौर्य साम्राज्य की स्थापना के दौरान ऐसी ही घटनाएँ घटी थीं। जनता में व्याप्त इन भय, निराशा या विद्वेष के भावों को दूर करने के लिए चंद्रगुप्त शरद पूर्णिमा के दिन उत्सव के आयोजन की घोषणा करता है जिससे कि ''प्रकृति की इस चंद्रमयी निर्मलता में जनता के हृदय की समस्त पाप वासनाएँ धुल जाएँ।'' इससे स्पष्ट होता है कि चंद्रगुप्त जनता में अपने नए शासक (यानी स्वयं चंद्रगुप्त) के प्रति विश्वास और निष्ठा उत्पन्न करना चाहता है। किंतु इसी समय वह इस बात के प्रति भी सचेत है कि इस उत्सव में राजकोष से धन व्यय न किया जाए बल्कि इस पर आने वाला खर्च स्वयं सम्राट के कोष से किया जाए। इससे हमें पता चलता है कि चंद्रगुप्त शासक के रूप में अपने कर्त्तव्यों के प्रति कितना जागरूक है। 'राजकोष' का धन जनता का धन है और उसका व्यय जनता के कार्यों यानी शासन, सेना और न्याय व्यवस्था पर किया जाना चाहिए न कि उत्सवों के आयोजन पर या आनंद उल्लास पर। इसीलिए चंद्रगुप्त प्रजा के मनोरंजन पर अपने व्यक्तिगत कोष से धन व्यय करने का आदेश देता है। इस कार्य से चंद्रगुप्त की कर्त्तव्य निष्ठा का पता तो चलता ही है उसकी कुशल शासन क्षमता का भी पता चलता है क्योंकि जब जनता को पता चलेगा कि सम्राट प्रारंभ से ही जनता के प्रति कर्त्तव्यपरायण है तो उसमें भी सम्राट के प्रति निष्ठा और कर्त्तव्य भावना जागेगी। इसी से कौमुदी महोत्सव के अवसर पर नगर की भव्य सजावट के प्रति चंद्रगुप्त काफी उत्सुक है। वसुगुप्त इस अवसर पर राजनर्तकी के नृत्य का प्रस्ताव रखता है तो चंद्रगुप्त सहमत हो जाता है क्योंकि वह कला और सौंदर्य के प्रति भी अनास्था नहीं व्यक्त करना चाहता। सुशासन व्यवस्था में कलाओं के उचित विकास का अवसर होता है यह बात चंद्रगुप्त सिद्ध करना चाहता है। यशोवर्मन द्वारा दी गई चेतावनी की उपेक्षा करते हुए वह नृत्य आयोजन की अनुमति दे देता है।

यहीं हमें चंद्रगुप्त के चरित्र के एक अन्य पहलू का पता चलता है। वह सहज विश्वास कर लेने वाला व्यक्ति है। अन्य लोगों के आचरण पर संदेह नहीं करता। किसी के द्वारा चेतावनी दिए जाने पर भी आसानी से सचेत नहीं होता। वसुगुप्त के प्रति उसके मन में कभी-कभी हल्का. सा संदेह उठता है तब भी वह इस बात को स्वीकार नहीं करना चाहता कि विद्रोह के बीज अंदर ही अंदर अंकुरित हो रहे हैं। यह स्थिति चंद्रगुप्त के चरित्र में दूरदर्शिता की कमी और गहरी अंतर्दृष्टि के अभाव की सूचक है। जिस बात को यशोवर्मन समझता है और जिसे चाणक्य बहुत अच्छी तरह जानता है यह बात अंत तक चंद्रगुप्त की समझ में नहीं आती। वह वसुगुप्त और अलका के षड्यंत्र से अनजान ही बना रहता है। यहाँ तक कि अपनी दूरदर्शिता की कमी से वह चाणक्य का अपमान भी कर देता है। तक्षशिला में चाणक्य चंद्रगुप्त के गुरु रह चुके हैं। मौर्य साम्राज्य की स्थापना भी चंद्रगुप्त ने चाणक्य की सहायता से ही की है और महामंत्री के रूप में कौमुदी महोत्सव को रोक कर तथा अलका और वसुगुप्त को बंदी बनाकर भी वह चंद्रगुप्त के मार्ग में आ रही भयंकर विपदाओं को ही दूर करना चाहता है। किंतु कौमुदी महोत्सव के आयोजन में चाणक्य का हस्तक्षेप चंद्रगुप्त को बिल्कुल नागवार गुजरता है। वह समझने लगता है कि चाणक्य घोर अविश्वासी, ईर्ष्यालु और हिंसाप्रिय व्यक्ति है :

> *''अपनी राजनीति में अविश्वासी बने हुए चाणक्य। तुम प्रत्येक व्यक्ति को गुप्तचर और प्रत्येक नारी को विषकन्या समझ सकते हो। राज्य-सीमा की रेखा पर रेंगती हुई तुम्हारी आँखों की पुतलियाँ काले कीड़े की तरह केवल निरीह जीवों की हिंसा ही करना जानती हैं।''*

चंद्रगुप्त का यह कथन वस्तुतः किसी दूरदर्शी, धैर्यवान और विवेकपूर्ण सम्राट का कथन प्रतीत नहीं होता। यह ऐसे चिड़चिड़े व्यक्ति का क्रोध दिखाई देता है जो अपनी इच्छा की पूर्ति न होने पर बेकाबू हो जाता है। जब चाणक्य प्रमाणित कर देता है कि अलका विषकन्या है और वसुगुप्त राक्षस का गुप्तचर तब चंद्रगुप्त को अपनी भूल का अहसास होता है और वह स्वीकार करता है।

> *''महामंत्री चाणक्य! चंद्रगुप्त को तुम्हारी आवश्यकता है। महामंत्री चाणक्य के बिना यह राज्य नष्ट हो जाएगा।''*

चंद्रगुप्त के चरित्र की एक अन्य विशेषता का भी हमें पता चलता है। जिस काम को करने का निर्णय वह लेता है उसके प्रति किसी का विरोध नहीं चाहता। कौमुदी महोत्सव के आयोजन का चाणक्य द्वारा विरोध उसे नितांत अनुचित और अवहेलनापूर्ण लगता है। यद्यपि यह अहसास उसे रहता है कि नई-नई स्थापित शासन व्यवस्था में हर काम को करने से पहले चाणक्य से परामर्श करना चाहिए। वसुगुप्त की समाहर्त्ता पद पर नियुक्ति तथा कौमुदी महोत्सव की घोषणा के बारे में उसने परामर्श नहीं किया यह बात वह आरंभ से स्वीकार करता है। लेकिन अपनी इस चूक के प्रति ज्यादा गंभीर नहीं है क्योंकि अपनी सफलता को लेकर अत्यंत उत्साहित है।

किंतु आरंभ में हमें चंद्रगुप्त के जिस आत्मविश्वासपूर्ण सक्षम व्यक्तित्व के दर्शन होते हैं उसका विकास आगे नहीं दिखाई देता। एकांकी के अंत तक पहुँचते-पहुँचते वह काफी कमजोर और ज़िद्दी किस्म का व्यक्ति दिखाई देने लगता है।

21-3-2 pk.kD;

कौमुदी महोत्सव का दूसरा प्रमुख पात्र है, चाणक्य। इस एकांकी में चाणक्य का प्रवेश तब होता है जब कथा मध्य तक पहुँच जाती है किंतु अन्य पात्रों से उसके बारे में हम आरंभ से ही सुनते हैं। तक्षशिला के, गुरुकुल में चाणक्य चंद्रगुप्त का आचार्य तथा मित्र रह चुका था। उसी की सहायता से चंद्रगुप्त नंदवंश का अंत करके मौर्य साम्राज्य की स्थापना करने में सफल हुआ है। आरंभ में वसुगुप्त तथा यशोवर्मन की बातचीत से तथा उसके बाद चंद्रगुप्त के कथनों से हम जान जाते हैं कि चाणक्य राजनीति का श्रेष्ठ विद्वान तथा अनूठी अंतर्दृष्टि और बुद्धिमता संपन्न व्यक्ति है तथा सम्राट चंद्रगुप्त का महामंत्री है। उसी के नीति-कौशल से नंद के अन्याय और अत्याचार पूर्ण शासन का अंत हुआ है।

चाणक्य का मंच पर प्रवेश बड़े ही नाटकीय और कौतुहलपूर्ण ढंग से होता है। अलका के नृत्य पर प्रसन्न होकर चंद्रगुप्त उसे पुरस्कार देना ही चाहता है कि सहसा चाणक्य प्रवेश करके कहता है ''पुरस्कार नहीं दिया जाएगा सम्राट!'' यहीं पर घटनाएँ एक नया मोड़ लेती हैं। चाणक्य चंद्रगुप्त को समझाता है कि उसके जीवन के लिए खतरा है और सैनिकों को आज्ञा देता है कि वसुगुप्त तथा अलका को बंदी बना ले। वसुगुप्त, अलका और चंद्रगुप्त आदि के विरोध के बावजूद चाणक्य का कथन है:

> *''कुछ मत कहो इस समय सम्राट चंद्रगुप्त! चाणक्य अपना कर्त्तव्य अच्छी तरह समझता है।''*

इसके साथ ही चाणक्य यह भी बता देता है कि उसने कौमुदी महोत्सव का आयोजन रद्द कर दिया है। वह चंद्रगुप्त को भावी संकट के प्रति आगाह करता है और चंद्रगुप्त द्वारा बुरी तरह से अपमानित किए जाने के बावजूद वह राष्ट्र और सम्राट का अमंगल नहीं चाहता। अपमान से वह क्रोध की भयंकर ज्वाला में जलने लगता है और महामंत्री का पद त्याग देता है। चंद्रगुप्त को याद भी दिलाता है कि चाणक्य का क्रोध और प्रतिशोध कितना भयंकर है इसका प्रमाण है नंदवंश का समूल नाश। किंतु वह अपने द्वारा ही रचे संसार का विध्वंस नहीं करना चाहता और घोर अपमान को विष की तरह पी जाता है यही चाणक्य की महानता है। वह जो कुछ कर रहा है चंद्रगुप्त की रक्षा के लिए। किंतु चंद्रगुप्त नासमझ हो कर अपने व्यंग्य-वचनों से उसे प्रताड़ित किए जा रहा है। चाणक्य अपनी शक्ति से भली-भाँति परिचित है किंतु वह मौर्यवंश का विनाश करने की प्रतिज्ञा न लेकर करुणा और शांति का मार्ग अपनाने के बारे में सोचता है।

इतने पर भी चंद्रगुप्त कहता है कि यदि उसके द्वारा लगाया गया आक्षेप गलत निकला तो उसे दंड दिया जाएगा। चाणक्य किसी विवशता से नहीं अपितु अपनी इच्छा से सत्य का उद्घाटन करने को तैयार हो जाता है किंतु एक शर्त पर :

''इस उद्घाटन के अनंतर में एक क्षण भी यहाँ नहीं ठहर सकूँगा। यह वातावरण अभिशाप बनकर मेरे रोम-रोम में प्रतिहिंसा की ज्वाला उत्पन्न कर रहा है।''

और रहस्योद्घाटन के बाद वह तुरंत चला जाता है। चाणक्य के संपूर्ण व्यवहार से उसका जो चरित्र हमारे सामने उभर कर आता है उसकी विशेषताएँ हैं–दूरदर्शिता, चतुराई, स्वाभिमान, विवेक, धैर्य, निःस्वार्थता, क्षमाशीलता, नीतिपटुता, देशभक्ति और सम्राट चंद्रगुप्त के प्रति निष्काम निष्ठा का भाव।

जब हम चंद्रगुप्त से चाणक्य के चरित्र की तुलना करते हैं तो देखते हैं कि चंद्रगुप्त की तुलना में चाणक्य का व्यक्तित्व बड़ा बनकर उभरता है। चाणक्य वह सब कर पाने में सक्षम है जो चंद्रगुप्त समझ भी नहीं पाता। इन सबसे बढ़ कर चाणक्य की विशेषता है निःस्वार्थ भाव से देश और जन कल्याण की ओर प्रवृत्त रहना। वह अपने लिए नहीं, चंद्रगुप्त की भलाई के लिए सक्रिय है।

21-3-3 olxlr

वसुगुप्त एकांकी का अन्य महत्त्वपूर्ण पात्र है। वह कुसुमपुर का समाहर्त्ता है तथा एकांकी में आरंभ से अंत तक मौजूद रहता है। नंद के महामंत्री राक्षस द्वारा तैयार किए गए चंद्रगुप्त की हत्या के षड्यंत्र में उसकी प्रमुख भूमिका है। वसुगुप्त अपनी चापलुसी भरी बातों से चंद्रगुप्त का विरोधी है किंतु यह बात चंद्रगुप्त को पता नहीं। वह वसुगुप्त पर आखिर तक भरोसा करता है और वसुगुप्त अपने षडयंत्र में कामयाब रहता यदि चाणक्य आकर भेद न खोल देता। वसुगुप्त चरित्र में एक खास तरह की वाक्पटुता (बातचीत की कुशलता) भी है। इसी से वह चंद्रगुप्त से अपनी बात मनवा लेता है। कौमुदी महोत्सव का आयोजन चंद्रगुप्त ने उसी के सुझाव पर किया है। फिर आयोजन में राजनर्तकी के नृत्य के प्रस्ताव को भी वह बड़ी चतुराई के साथ रखता है और चंद्रगुप्त से इसकी सहमति पाने में सफल हो जाता है। इस तरह वसुगुप्त की सभी योजनाएँ सफल होती प्रतीत होती हैं। किंतु चाणक्य की विलक्षण बुद्धि के आगे वसुगुप्त की चतुराई नहीं चल पाती। चाणक्य के प्रश्नों का सीधे उत्तर न देकर वसुगुप्त उसे बातों में उलझाना चाहता है किंतु चाणक्य सबके समक्ष रहस्योद्घाटन में सफल हो जाता है। वह वसुगुप्त की ही चाल से उसी का अंत करा देता है।

dkenh egkRlo d bu rhu ik=k d pfj= dk fo'y"k.k i<u d ckn vc ;'kkoeu vkj vydk dk pfj= fo'y"k.k vki Lo;a dj ldr gA

21-4 ifjn`'k

हम पढ़ चुके हैं कि परिवेश अथवा देशकाल का सजीव और स्वाभाविक चित्रण एकांकी में प्रभावपूर्णता और विश्वसनीयता पैदा करता है। ऐतिहासिक कथावस्तु में देशकाल और भी अधिक महत्त्वपूर्ण इसलिए होता है कि पात्र जिस समय के हैं उस समय के लगें, घटनाएँ जिस समय की हैं उसी समय की लगें, अपने समय के विपरीत या दूर की न लगें। ''कौमुदी महोत्सव'' मौर्य साम्राज्य के आरंभ के काल से संबंधित है। उस समय के परिवेश को भाषा, भाव, अचार-व्यवहार आदि सभी स्तरों पर उभारा गया है। भाषा में संस्कृत शब्दावली का खूब प्रयोग है उदाहरण के लिए 'कार्यान्तिक', 'दैवारिक' जैसे शब्द। व्यक्तियों, स्थान, वस्तुओं, कर्मचारियों आदि के नाम और पदनाम में प्राचीन भारतीय युग का संकेत करते हैं। एकांकी के आरंभ में ही लेखक ने बता दिया है कि यह घटना 322 ईसा पूर्व की है। चंद्रगुप्त की वीरता और पराक्रम, नंद के शासन में कुसुमपुर में फैला क्लेश का वातावरण, राजनीति के छल-कपट, विषकन्याओं का प्रयोग, तक्षशिला के गुरुकुल में आयुर्विज्ञान, युद्धविद्या, व्याकरण की शिक्षा आदि के माध्यम से प्राचीन भारत का सजीव सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक परिवेश प्रस्तुत हुआ है। कौमुदी महोत्सव में दीपों की सजावट की योजना, नंद के वसंतोत्सवों और मदनोत्सवों की चर्चा, पुष्पदंत द्वारा नगर की सजावट के विवरण और अलका के गायन तथा नृत्य आदि की चर्चा के माध्यम से तत्कालीन समाज और संस्कृति की तस्वीर प्रस्तुत की गई है। चंद्रगुप्त के संवादों द्वारा मौर्य कालीन शासन और सुव्यवस्था, चाणक्य के संवादों द्वारा राजनीति और कूटनीति की जटिल प्रक्रियाओं को प्रस्तुत किया गया है। इस तरह परिवेश के सृजन द्वारा इतिहास का सजीव चित्र उपस्थित किया गया है।

4. निम्नलिखित कथनों से चंद्रगुप्त के चरित्र की कौन-कौन सी विशेषताएँ उभरती है।
   क) ''प्रजा का संतोष ही मेरे सुख का अग्रदूत है''
   ख) ''आज कौमुदी महोत्सव में तो सौंदर्य की भी रक्षा होगी''
   ग) ''आर्य चाणक्य! सैनिक चंद्रगुप्त विलासी नंद नहीं है जो पतन के गर्त के मुख पर खड़ा होकर हल्की-सी राजनीति के धक्के की प्रतीक्षा करें। मौर्य चंद्रगुप्त हिमाद्रि की तरह सुदृढ़ है जिसे महामंत्री चाणक्य की कुटिल राजनीति रूपी आँधियों के झोंके एक क्षण भी विचलित नहीं कर सकते।

5. *''मुझे इसकी चिंता नहीं है, सम्राट्! गर्व मेरे अंतःकरण का अधिकार है। वह राज्य से अनुशासित नहीं है। किंतु मैं यह स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि चाणक्य के गर्व की चिनगारी स्वर्ग के राज्य को प्राप्त करके भी लपट नहीं बनेगी। हाँ, अपमान के हल्के झोंके से ही यह दावाग्नि बन कर तुम्हारे वैभव के नंदन वन को क्षण भर में भस्म कर सकती है। क्या तुम नंदवंश के विनाश की पुनरावृत्ति देखना चाहते हो।''*

   उपयुक्त पंक्तियाँ चाणक्य की किन विशेषताओं की सूचक हैं। सही (✓) और (×) गलत का निशान लगाइए।
   क) घमंड
   ख) स्वाभिमान
   ग) प्रतिशोध
   घ) निस्वार्थता
   ङ) शक्ति और सामर्थ्य
   च) दीनता
   छ) स्वार्थपरता
   ज) छल-कपट
   झ) कूटनीति

vH;kl

1. चाणक्य के व्यक्तित्व में वे कौन-सी विशेषताएँ हैं जो चंद्रगुप्त में नहीं हैं। लगभग सात-आठ पंक्तियों में उत्तर दीजिए।

   ....
   ....
   ....
   ....
   ....
   ....
   ....
   ....
   ....

2. कौमुदी महोत्सव में ऐतिहासिक परिवेश प्रस्तुत करने के लिए लेखक ने किन-किन चीजों का सहारा लिया है?

   ....
   ....
   ....
   ....

21-5 lajpuk-f'kYi

इकाई 18 में हमने नाट्य विधा में संवाद तथा भाषा शैली के महत्त्व की चर्चा की थी। आगे हम 'कौमुदी महात्सव' एकांकी की भाषा शैली और संवादों की विशेषताओं का विवेचन करेंगे।

21-5-1 Hkk"kk

हम जान चुके हैं कि यह एकांकी ऐतिहासिक विषय को लेकर लिखा गया है। किसी रचना का विषय लेखक की भाषा को अवश्य प्रभावित करता है। लेखक जिन व्यक्तियों, कार्यों और जिन स्थितियों को प्रस्तुत करता है उनके अनुकूल अपनी भाषा को ढालता है। इसलिए रचना यदि पुराने समय से संबंधित है, तो उस समय का वातावरण पैदा करने के लिए उस समय की वस्तुओं, स्थानों, आचार-व्यवहार आदि का समावेश किया जाता है।

प्रस्तुत एकांकी की भाषा में भी ऐतिहासिकता का स्वर मौजूद है। यहाँ मेरुदंड, शृगाल, अलिंद समरांगण, आसव, स्फुलिंग आदि तत्सम शब्दों की प्रधानता है। भवनों, स्थानों, वस्तुओं और कर्मचारियों के नाम संस्कृतनिष्ठ शब्दावली में हैं, जैसे–वातायन, प्रकोष्ठ, सिंह द्वार, खड्ग, अंतपाल, कार्यातिक आदि।

'कौमुदी महोत्सव' राजनीतिक विषय को लेकर लिखा गया एकांकी है तथा राजनीतिक षड्यंत्र, विषकन्या का प्रयोग आदि कूटनीतिक चालें यहाँ प्रस्तुत की गई हैं फिर भी इसकी भाषा में राजनीति की व्यावहारिकता की अपेक्षा काव्यात्मकता अधिक है। रामकुमार वर्मा नाटक लेखक होने के साथ-साथ कवि भी हैं। इसी से उनकी भाषा में काव्यात्मक अलंकरण और भावमयता की प्रधानता है। 'कौमुदी महोत्सव' के गद्य में कविता के समान उपमाएँ और रूपक सर्वत्र विद्यमान हैं। इससे कहीं-कहीं तो बहुत अच्छे बिंबों की सृष्टि हुई है जैसे :

> *''मुझे ऐसा ज्ञात होता है जैसे युद्ध भैरवी ने काषाय वस्त्र धारण कर लिए हैं और वह संन्यासिनी हो गई है। नगर की शोभा मलिन है जैसे तलवार की झंकार वायु में विलीन हो गई है।''*

यहाँ युद्ध की देवी के संन्यास लेकर गेरुआ वस्त्र पहनने का बिंब और तलवार की खनक हवा में गायब हो जाने का बिंब दर्शक या पाठक की कल्पना में एकदम बन सकता है। इसी तरह उत्सव के हर्ष उल्लास में किसी तरह के खून-खराबे या वैमनस्य से बचने की बात बड़े अच्छे ढंग से कही गई है। किंतु भाषा की लगातार अतिरिक्त सजावट से कहीं-कहीं स्पष्टता और सहजता को नुकसान पहुँचा है। उदाहरण के लिए, नीचे लिखी पंक्तियों को देखिए :

> *''चन्द्रगुप्त, अंतपाल यशोवर्मन! नृत्य और संगीत कौमुदी महोत्सव की वह प्रस्तावना है जिसमें उमंग की रूपरेखा मंगल के रंग में सुसज्जित होती है। नृत्य ऐसी मनोहर भावनाएँ हैं जिनमें सुख का रहस्य जागता है।''*

21-5-2 'kSyh

'कौमुदी महोत्सव' की नाट्य शैली के प्रमुख गुण हैं : विषयवस्तु की स्पष्टता, संक्षिप्तता और घटनाओं तथा प्रसंगों का मार्मिक प्रस्तुति। यद्यपि एकांकी ऐतिहासिक राजनीतिक विषय को लेकर लिखा गया है किंतु इसकी शैली भावप्रधान तथा आलंकारिक है। पात्रों के चरित्र, स्थितियों और मनोभावों को काफी विश्लेषण विवेचन के माध्यम से उभारा गया है। यदि वर्मा जी ने काव्यात्मकता द्वारा अतिरिक्त चमक-दमक न पैदा की होती तो यह एकांकी आलंकारिक शैली के चमत्कार से बच गया होता। किंतु ऐसा लगता है कि सरल और प्रसन्न शैली से विषय-वस्तु, संवाद आदि के प्रभावशाली प्रस्तुतीकरण की कला के बावजूद उनका कवि स्वभाव उन पर हावी रहा है। परिणाम यह हुआ कि संवादों में विशेष रूप से चंद्रगुप्त और चाणक्य के वार्तालाप में गद्य की भावमय और व्यंजना प्रधान शैली के दर्शन होते हैं। राजनीतिक संवादों में प्रायः सीधी, सपाट और व्यंजना प्रधान शैली अपनाई गई है।

21-5-3 laokn

हम यह पढ़ चुके हैं कि संवाद एकांकी का महत्त्वपूर्ण तत्त्व होता है। एकांकीकार अपने कथ्य को अपने पात्रों के मुख से जिस कौशल से कहला पाता है उसी में एकांकीकार की सफलता निहित होती है। 'कौमुदी महोत्सव' के संवादों में हमें कुछ खास बातें नजर आती हैं:

1) अक्सर पात्रों ने अपनी बात को काफी अलंकृत ढंग से कहा है। उपमाओं, रूपकों के कारण कहीं-कहीं संवाद काफी लंबे भी हो गए हैं। यद्यपि कुछ स्थितियों में लंबे तथा भाव प्रधान संवाद भी काफी प्रभावपूर्ण हैं जैसे अपमान की ज्वाला से जलते चाणक्य का यह कथन–

''मौर्य। लो अपना शस्त्र (फेंक देते हैं) यह कलंक इसी समय दूर करता हूँ। राजमंत्री राक्षस की राजनीति के कुचक्र में आने वाले चंद्रगुप्त। क्या मैं अपनी शिखा खोल कर विनाश की फिर प्रतिज्ञा करूँ। जिस ब्राह्मण की शिखा सर्पिणी ने नंदवंश को एक ही दंशन में समाप्त कर दिया, क्या मौर्य भी उस सर्पिणी, पर हाथ रखना चाहता है? जिस चंद्रगुप्त को अपना आत्मीय समझ कर कुसुमपुर के सिंहासन पर आरूढ़ कराया उसी चंद्रगुप्त के विनाश से क्या श्मशान को सुसज्जित करूँ? वाह रे ब्राह्मण। ब्रह्म ज्ञान में जीवित रहने वाला आज राज्य के कुचक्रों से लांछित हो रहा है। आज अपने सृष्टि सागर का विष मैं पी ही रहा हूँ, किंतु चंद्रगुप्त। मुझमें कालकूट को पी जाने वाले नीलकंठ की शक्ति है। समझते हो?''

2) लेकिन जब चंद्रगुप्त अपनी नीतियों या योजनाओं का व्यापक विवरण देता है या चाणक्य से लगातार बहस करता चला जाता है तो लंबे, अलंकृत और पौराणिक कथाओं के संदर्भों से युक्त संवाद बोझिल से लग उठते हैं। यशोवर्मन और चंद्रगुप्त का ऐसा ही एक संवाद नीचे दिया जा रहा हैं–

'';'kkoeu % हाँ सम्राट! राजनर्तकी के जीवन का यह सबसे बड़ा अभिशाप है कि वह नंदवंश के विनाश का कारण बनी। और इस तरह वह निर्दोष नहीं कही जा सकती।

pnxIr % निर्दोष? वह सब प्रकार से दोषी कही जानी चाहिए। गौतम ने अहिल्या को शाप क्यों दिया? क्या अहिल्या ने अपने सदाचार से अपने सौंदर्य की रक्षा नहीं की थी, फिर क्यों उसने इंद्र को नहीं पहचाना। शची का सौभाग्य अप्सराओं को बाँटने वाले इंद्र की लालसा का भी परिचय चाहिए। वैसे ही क्या अलका महाराज नंद को नहीं पहचान सकी? क्या महाराज नंद की आँखों में उसके अंगराग की अरुण रेखाएँ विद्युत बन कर नही चमक उठीं? यशोवर्मन तुम जानते हो आकाश की उल्का प्रकाश से ओतप्रोत रहती है, किंतु जब वह उदित होती है तो समस्त संसार में अमंगल की आशंका क्यों होती है?''

चंद्रगुप्त तथा अलका के बीच संवाद लंबे तो नहीं किंतु कार्य-व्यापार के तेजी से आगे बढ़ने में बाधक बनते हैं। इसी तरह चंद्रगुप्त और चाणक्य के बीच काफी लंबी कटु बहस होती है और चंद्रगुप्त चाणक्य से बहुत अधिक अपशब्द कहता है। यदि वह वार्तालाप इतना लंबा न होता तब भी एकांकी की प्रभावन्विति में कोई क्षति न होती।

'एकांकी के कुछ अंशों में संवाद बड़े ही सार्थक, रोचक और प्रभावपूर्ण हैं। वहाँ वार्तालाप की सहजता के साथ-साथ व्यंग्य की वक्रता भी है। अलका और वसुगुप्त के बंदी बनाए जाने के बाद चंद्रगुप्त और चाणक्य का वार्तालाप ऐसा ही है। पूरी स्थिति नाटकीयतापूर्ण मोड़ लेती है। चंद्रगुप्त को अपने आत्मसम्मान और राजमर्यादा की रक्षा न होने पर क्रोध आता है किंतु चाणक्य अपनी कर्त्तव्य निष्ठा में अडिग है।'

''pk.kD; % कौमुदी महोत्सव!
pnxIr % हाँ कौमुदी महोत्सव। क्या आपने मेरी घोषणा नहीं सुनी।
pk.kD; % वह सुनने योग्य नहीं थी।
pnxIr % आप राजमर्यादा का इतना अपमान कैसे कर रहे हैं, महामंत्री।
कौमुदी महोत्सव की घोषणा कुसुमपुर में मेरी प्रथम राज घोषणा है।
pk.kD; % वह राज घोषणा प्रारंभ होने से पूर्व ही समाप्त हो गई।
pnxIr % (आश्चर्य से) समाप्त हो गई। किसने यह साहस किया?
pk.kD; % मैंने, आर्य चाणक्य ने।
pnxIr % इसीलिए मुझे घोषणा का तूर्यनाद नहीं सुन पड़ा। तो आपने कौमुदी महोत्सव की घोषणा नहीं होने दी।
pk.kD; % नहीं, मैंने ही घोषणा नहीं होने दी।
pnxIr % मैं कारण जानना चाहता हूँ।
pk.kD; % मैं कारण नहीं बतला सकता।
pnxIr % सम्राट कौन है, चंद्रगुप्त या चाणक्य?
pk.kD; % चंद्रगुप्त।
pnxIr % फिर सम्राट चंद्रगुप्त की आज्ञा की अवहेलना क्यों हो रही है।
pk.kD; % इसलिए कि वह आज्ञा किसी मचले बालक के हठ की तरह है।
pnxIr % फिर भी उसकी रक्षा होनी चाहिए।
pk.kD; % नहीं, बालक आग पकड़ना चाहता है। उसे आग पकड़ने की सुविधा नहीं दी जा सकेगी।''

इसी तरह चाणक्य और वसुगुप्त के वार्तालाप में भी स्थिति के तनाव को उत्तर-प्रत्युत्तर के माध्यम से उभारा गया है। यही कारण है कि यह एकांकी जैसे-जैसे चरम सीमा की ओर बढ़ता है वैसे-वैसे काफी प्रभावपूर्ण होता जाता है।

ck/k i'u

6. 'कौमुदी महोत्सव' एकांकी की भाषा की चार प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

....

....

....

7. निम्नलिखित संवाद मंच पर कैसा प्रभाव उत्पन्न करेंगे?

pnxlr % *राजनीति और कविता। (राजनर्तकी से) क्यों राजनर्तकी! तुम राजनीति की ताल पर नृत्य कर सकती हो?*

vydk % *सम्राट्! अभी तक तो राजनीति ही मेरे नृत्य की ताल थी। किंतु मैंने इसकी ओर कभी ध्यान दिया ही नहीं। राजनर्तकी का राजनीति से क्या संबंध, सम्राट्! वह तो राज्य की अनुचरी-मात्र है।*

pnxlr % *(हँसकर) इन्हीं छद्मवेशी शब्दों से अनुचरी स्वामिनी बन जाती है, राजनर्तकी! महाराज नंद तुम पर मोहित थे या तुम महाराज नंद पर मोहित थी!*

vydk % *सम्राट मुझे क्षमा करें। सच्ची नारी मोहित नहीं होना चाहती, वह आत्म. समर्पण करना चाहती है। जो नारी मोहित होती है, वह अपने रूप का व्यापार करती है, हृदय का समर्पण नहीं।*

pnxlr % *तुम किस व्यापार में विश्वास करती हो–रूप के व्यापार में या हृदय के व्यापार में?*

....

....

....

....

....

8) निम्नलिखित वार्तालाप को पढ़िए :

olxlr % *मैं कुसुमपुर में निवास नहीं करता, महामंत्री! मैं अमरावती से कुसुमपुर आया अवश्य करता हूँ।*

pk.kD; % *वर्ष में कितनी बार आया करते हो?*

olxlr % *मैं कह नहीं सकता।*

pk.kD; % *(कठोर स्वर में) प्रश्न की अवहेलना नहीं हो सकती। ठीक उत्तर दो।*

olxlr % *महाराज नंद के प्रमुख उत्सवों में आया करता था।*

pk.kD; % *गत वर्ष वसंतोत्सव में सम्मिलित हुए थे? अमरावती के अन्तपाल।*

olxlr % *हाँ, महामंत्री।*

pk.kD; % *वसन्तोत्सव में राजनर्तकी अलका ने नृत्य किया था। तुमने उसे देखा था?*

olxlr % *हाँ, महामंत्री।*

pk.kD; % *तब तुम अलका के नाम से परिचित हो।*

olxlr % *हाँ महामंत्री।*

pk.kD; % *अभी तुमने कहा कि मैं अलका का नाम भी नहीं जानता और कहा कि कौमुदी महोत्सव के एक क्षण पूर्ण राजनर्तकी का परिचय मिला?*

olxlr % *मैं राजनीति की बातें प्रकट नहीं करता।*

pk.kD; % *(हँसकर) बड़े राजनीतिज्ञ हो। अच्छा, राजनीति की बातें मत कहो। सीधा उत्तर दो? तुम राजमंत्री राक्षस के गुप्तचर कब हुए?*

olxlr % *महामंत्री मैं दुष्ट राक्षस को जानता भी नहीं हूँ।*

pk.kD; % *उसी तरह जिस तरह राजनर्तकी को नहीं जानते थे।*

सही (√) या गलत (×) का निशान लगा कर बताइए कि उपर्युक्त वार्तालाप

क) बोझिल संवादों को प्रस्तुत करता है

ख) तीव्र संघर्ष और तनाव को प्रस्तुत करता है

ग) मंच पर प्रभावहीन होगा
घ) पाठक या दर्शक में जिज्ञासा की सृष्टि करता है
ङ) एकांकी को प्रभावपूर्ण बनाता है
च) उत्तर-प्रत्युत्तर के माध्यम से कथावस्तु को सक्रियता प्रदान करता है।

21-6 vfHkus;rk ;k jaxeaph;rk

डॉ. रामकुमार वर्मा स्वयं रंगमंच से जुड़े रहे हैं अतः उन्हें मंचीय आवश्यकताओं की व्यावहारिक जानकारी है। 'कौमुदी महोत्सव' में उन्होंने बड़े ही स्पष्ट और सार्थक रंग-निर्देश दिए हैं। पात्र संख्या कम है। दृश्य एक है। घटनाएँ एक ही स्थान पर घटती है। अतः मंच सज्जा आदि की भी कोई समस्या नहीं है। कथा-विकास में कुतूहल तथा द्वंद्व के माध्यम से नाटकीयता की सृष्टि हुई है। चाणक्य का सहसा प्रवेश और वसुगुप्त और अलका को बंदी बनाना कथा को आकस्मिक मोड़ प्रदान करता है और दर्शक की जिज्ञासा बढ़ती है जिसका समाधान अंत में चरम सीमा पर पहुँच कर रहस्योद्‌घाटन द्वारा होता है। चाणक्य और चंद्रगुप्त के बीच वार्तालाप में द्वंद्व की सृष्टि होती है। यद्यपि यह वार्तालाप अत्यधिक तीखी कटुक्तियों से पूर्ण तथा विस्तृत लंबा चलता है और घटना व्यापार थोड़ी देर के लिए रुक-सा गया है। इस दौरान पाठक या दर्शक की जिज्ञासा कायम रखना आसानी से संभव प्रतीत नहीं होता। यहाँ संवाद काव्यात्मक होने के कारण भाषण या वाद-विवाद से प्रतीत होते हैं। अलका के गायन और नृत्य आदि के समावेश से एकांकी की रंगमंचीय अपेक्षाएँ बढ़ जाती हैं। ऐसी अभिनेत्री अपेक्षित है जो न केवल अभिनय में, बल्कि गायन और नृत्य में भी कुशल हो। ;gk¡ ,d vkSj ckr fopkj.kh; gS *dkSeqnh egksRlo* oekZ th us ewyr% jsfM;ks ds fy, fy[kk FkkA blh ls blesa /ofu izHkkoksa dk fo'ks"k /;ku j[kk x;k gSA uR;-xk;u dh n`f"V ls Hkh ;g jsfM;ks ds fy, ,d lHkkouk iw.kZ ,dkadh gSA D;ksafd ogk¡ ;g t:jh ugha gksxk fd vydk dh Hkwfedk dj jgh vfHkus=h gh uR; vkSj xk;u izLrqr djsA bu dykvksa esa izoh.k xkf;dk vkSj urZdh dk 'kkfey fd;k tk ldrk gSA

21-7 ewY;kadu

हम 'कौमुदी महोत्सव' एकांकी का विश्लेषण कर चुके हैं। आगे हम लेखकीय दृष्टि, एकांकी के प्रतिपाद्‌य और शीर्षक की सार्थकता के संबंध में विचार करेंगे।

,dkadh dk izfrik|

चंद्रगुप्त मौर्य को लेकर हिंदी में पहले भी नाटक लिखे जा चुके हैं। वर्मा जी से पहले जयशंकर प्रसाद इस विषय पर 'कल्याणी परिणय' और 'चंद्रगुप्त' नाटक लिख चुके थे। अतः सवाल यह उठता है चंद्रगुप्त मौर्य के प्रसंग को अपने नाटक का विषय बनाने के पीछे वर्मा जी का क्या उद्देश्य था। प्रसाद जी के नाटक मौर्य शासन की स्थापना और चंद्रगुप्त की विजय पर आकर समाप्त हो जाते हैं। वर्मा जी इस एकांकी माध्यम से दिखाना चाहते हैं कि मौर्य शासन की स्थापना करके चंद्रगुप्त ने प्रजा के सुख और संतोष को अपने शासन का आधार बनाया। इस तरह शासक के रूप में चंद्रगुप्त के उत्तरदायित्वपूर्ण व्यवहार को एकांकी के केंद्र में रखा गया है। विलासी नंद के अन्याय और अत्याचारपूर्ण शासन का अंत करने के लिए चंद्रगुप्त को शस्त्र बल का सहारा लेना पड़ा था। किंतु अब शांति और व्यवस्था स्थापित करना ही उनका उद्देश्य है। कौमुदी महोत्सव का आयोजन जनता के मन में क्षोभ और क्लेश को दूर करके द्वेष और उल्लास के संचार के लिए ही किया जा रहा है। पर इसमें राजकोष का धन व्यय नहीं होना चाहिए क्योंकि वह धन तो जनहित कार्यों तथा जनता की सुरक्षा पर व्यय के लिए है। इस अवसर पर नगर का भव्य शृंगार लोगों के मन में उत्साह जगाने में सहायक होगा। इस समय नृत्य और संगीत का आयोजन स्वीकार करके चंद्रगुप्त कलाओं को प्रोत्साहन देना चाहता है। सुशासन-व्यवस्था में सभी कलाओं को पनपने का भरपूर अवसर होता है। कुसुमपुर में चंद्रगुप्त की हत्या का प्रयास प्रसाद के 'चंद्रगुप्त' नाटक में भी दिखाया गया है। चाणक्य के नीति कौशल से ही चंद्रगुप्त इस घातक प्रहार से बच सका और उसके स्थान पर मालविका को आत्मबलिदान करना पड़ा। यहाँ वर्मा जी ने विषकन्या का प्रसंग लाकर प्राचीन भारतीय राजनीतिक और सांस्कृतिक स्थितियों को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

वसुगुप्त और अलका के प्रति सम्मान भावना भी एक हद तक चंद्रगुप्त की न्यायप्रियता की ही सूचक है। इसके माध्यम से लेखक शासक और जनता के संबंधों को स्पष्ट करना चाहता है और इस बात पर बल देता है कि शासक को उत्तरदायी होना चाहिए। चाणक्य की नीति कुशलता और सतर्कता के माध्यम से भी लेखक सुशासन व्यवस्था के महत्त्व को ही रेखांकित करता है। ध्यान देने की बात है कि इतिहास को दोहराना मात्र रामकुमार वर्मा का उद्देश्य नहीं है शासन व्यवस्था के लिए चाणक्य जैसे बुद्धिमान और त्यागी राजनीतिज्ञ और चंद्रगुप्त जैसे कर्त्तव्यनिष्ठ शासक वर्ग की आज भी आवश्यकता है। चाणक्य और चंद्रगुप्त के माध्यम से वह वर्तमान राजनीतिक.सामाजिक स्थितियों की ओर भी संकेत करता है।

,dkadh dk 'kh"kZd

एकांकी की समस्त घटनाएँ कौमुदी महोत्सव के आयोजन के इर्द-गिर्द घूमती हैं। पहले महोत्सव के आयोजन की तैयारी में और फिर चाणक्य द्वारा इसे रद्द कर दिए जाने की सूचना मिलने पर चाणक्य और चंद्रगुप्त के बीच विवाद में। वसुगुप्त भी अपने षड्यंत्र को सफल बनाने के लिए इस कौमुदी महोत्सव आयोजन का सहारा लेता है और चंद्रगुप्त के समक्ष इस आयोजन के दौरान नंदवश की राजनर्तकी के नृत्य का प्रस्ताव करता है और अंत में जब षड्यंत्र खुल जाता है तब एकांकी का अंत चंद्रगुप्त के वाक्य ''कौमुदी महोत्सव नहीं होगा''! की पुनरावृत्ति के साथ होता है। इस तरह कौमुदी महोत्सव समस्त घटना-व्यापार के केंद्र में रहता है। इस दृष्टि से एकांकी का शीर्षक सार्थक है।

vH;kl

3. 'कौमुदी महोत्सव' को सफलता से मंचित करने में जो थोड़ी बहुत बाधाएँ आ सकती हैं वह कौन-सी हैं?

   ....

   ....

   ....

4. 'कौमुदी महोत्सव' शीर्षक की क्या सार्थकता है?

   ....

   ....

   ....

21-8 lkjka'k

इस इकाई में हमने 'कौमुदी महोत्सव' एकांकी का विश्लेषण और मूल्यांकन किया। कथावस्तु, पात्र, भाषा, शैली और संवाद, अभिनेयता, संकलन-त्रय आदि की दृष्टि से एकांकी के विश्लेषण के पश्चात् एकांकी के प्रतिपाद्य लेखक की मूल दृष्टि और उसके शीर्षक की उपयुक्तता पर भी हमने विचार किया। अब आप 'कौमुदी महोत्सव' की विविध विशेषताओं को अच्छी तरह समझ गए होंगे। यह भी जान गए होंगे कि एकांकी का विश्लेषण और मूल्यांकन किस प्रकार किया जाता है। यदि आप चाहें तो किसी अन्य एकांकी का विश्लेषण करने का प्रयास कर सकते हैं।

21-9 'kCnkoyh

vUrnf"V % सूक्ष्म दृष्टि, व्यावहारिक ज्ञान, जानकारी
ukxokj % अरुचिकर, जो अनुकूल न हो
oSeuL; % वैर
dVfDr % कड़ुवी बात

21-10 cks/k iz'uksa@vH;klksa ds mÙkj

cks/k iz'u

1. यशोवर्मन के वाक्य सूचित करता है कि नंद वंश का अंत हो जाने के बावजूद कुसुमपुर में चंद्रगुप्त के विरोध का अंत नहीं हो गया है। नंद का महामंत्री राक्षस मौजूद है और वह

कूटनीति में निपुण है। वह अवश्य कोई षड्यंत्र रच रहा होगा। इसीलिए वह छिप कर कुसुमपुर से बाहर चला गया है।

2. वसुगुप्त ने राक्षस के साथ मिल कर चंद्रगुप्त की हत्या की योजना बनाई है। इसके लिए वह राजनर्तकी का विषकन्या के रूप में प्रयोग करना चाहता है।
3. चंद्रगुप्त को 'कौमुदी महोत्सव' की घोषणा का तूर्यनाद इसलिए नहीं सुनाई पड़ा कि चाणक्य आदेश दे देता है कि कौमुदी महोत्सव न मनाया जाए।
4. क) चंद्रगुप्त अपनी शासन व्यवस्था में प्रजा के सुख और संतोष को सबसे ऊँचा स्थान देता है।
   ख) कौमुदी महोत्सव के अवसर पर कला और सौंदर्य को महत्त्व प्रदान करके चंद्रगुप्त सिद्ध करना चाहता है कि वह न केवल वीर पराक्रमी शासक है अपितु कला और सौंदर्य का गुणग्राही भी है।
   ग) यह वाक्य चंद्रगुप्त के आत्म-विश्वास के साथ-साथ उसके व्यक्तित्व की कमजोरी को भी प्रकट करते हैं। चाणक्य के प्रति सम्मान और विश्वास का भाव उसके मन से बड़ी जल्दी घटने लगता है।
5. क) (×) ख) (√) ग) (×) घ) (√) ङ) (√)
   च) (×) छ) (×) ज) (×) झ) (×)
6. क) तत्सम शब्दों का प्रयोग ख) काव्यात्मक अलंकरण
   ग) भावनात्मकता घ) बिंबों का प्रयोग
7. चंद्रगुप्त और अलका का यह संवाद एकांकी के कार्य-व्यापार को आगे बढ़ाने की बजाय भावनात्मक वाद-विवाद प्रस्तुत करता है। अतः यह दर्शक की जिज्ञासा और आकर्षण को खींचे रखने में अधिक सक्षम नहीं होगा।
8. क) (×) ख) (√) ग) (×)
   घ) (√) ङ) (√) च) (√)

vH;kl

1. चंद्रगुप्त की तुलना में चाणक्य बहुत दूरदर्शी, नीति-कुशल और समझदार है। कुसुमपुर में आनंद और उल्लास के पीछे सुलग रही विद्रोह की चिनगारी को चंद्रगुप्त अनदेखा कर देता है। यशोवर्मन द्वारा समझाए जाने पर भी वह इस पर गौर नहीं करता। किंतु चाणक्य प्रत्यक्ष स्थिति के पीछे घट रही हर घटना पर गौर करता है। विद्रोह की शंका को निर्मूल नहीं समझता। चाणक्य में एक और विशेषता है जो चंद्रगुप्त में नहीं है। वह है चाणक्य की उदारता और चंद्रगुप्त के प्रति स्नेह भावना। चंद्रगुप्त छोटी-सी घटना से इतना क्रुद्ध हो जाता है कि चाणक्य को ईर्ष्यालु, कुटिल, घमंडी और क्षुद्र समझने लगता है। धैर्यपूर्वक स्थिति को देखना समझना ही नहीं चाहता और चाणक्य को अपना प्रतिद्वंद्वी मानने लगता है। ऐसा लगता है कि चंद्रगुप्त को अपने सम्मान के सिवा चाणक्य के सम्मान का ध्यान ही नहीं। किंतु चाणक्य उसके इस व्यवहार को क्षमा करता है क्योंकि उसका अपना कोई स्वार्थ नहीं, वह घातक षड्यंत्र से चंद्रगुप्त की रक्षा करना चाहता है।
2. लेखक ने भाषा, स्थान एवं व्यक्तियों के नामों, पदनामों, आचार-व्यवहार, क्रीड़ा-उत्सव, प्राचीन भारतीय समाज, राजनीति, संस्कृति तथा कला आदि के माध्यम से ऐतिहासिक परिवेश को प्रस्तुत किया है।
3. भावनात्मकता पूर्ण लंबे संवाद, जो वाद-विवाद की स्थिति तक पहुँच गए हैं और जिनके कारण कार्य-व्यापार लगभग ठहर गया है, मंचन की सफलता में बाधक होंगे।
4. एकांकी का संपूर्ण घटना व्यापार प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों तरह से (यानी चंद्रगुप्त और चाणक्य के कार्यकलाप तथा वसुगुप्त और अलका के षड्यंत्र के माध्यम से) कौमुदी महोत्सव के आयोजन के इर्द-गिर्द चलता है। अतः शीर्षक उपयुक्त तथा सार्थक है।